IJARASEM

ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 12, Issue 3, May - June 2025

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 8.028

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 8.028 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 3, May- June 2025

अल्बेरूनी काल में भारत की कृषि तकनीक एवं पशुधन प्रबंधन

मीनाक्षी
एम. फिल. विद्यार्थी
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा)

सारांश

भारत की सभ्यता और संस्कृति का इतिहास कृषि के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। प्राचीन काल से ही भारत एक कृषि–प्रधान देश रहा है, जहाँ भूमि, जल और जलवायु ने समृद्ध कृषि परंपराओं को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सिंधु घाटी सभ्यता (लगभग 2500 ईसा पूर्व) के समय से ही यहाँ गेहूँ, जौ, कपास और दालों की खेती के प्रमाण मिलते हैं, जो इस बात का साक्ष्य हैं कि भारत में कृषि का इतिहास हजारों वर्ष पुराना है। वैदिक काल में कृषि को दैवीय कर्म माना जाता था और इसे श्अन्नदाताश की संज्ञा दी गई। मध्यकाल में मुगल शासन के दौरान सिंचाई के नए तरीकों और फसलों के विविधीकरण ने कृषि को नई दिशा दी। ब्रिटिश काल में जमींदारी प्रथा और नकदी फसलों पर बल देने के कारण किसानों की स्थिति कमजोर हुई, लेकिन स्वतंत्रता के बाद हरित क्रांति (1960–70 के दशक) ने भारत को खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बना दिया। आज भारत विश्व के प्रमुख कृषि उत्पादक देशों में से एक है, जहाँ चावल, गेहूँ, दालें, कपास और गन्ने जैसी फसलों का बड़े पैमाने पर उत्पादन होता है। हालाँकि, जलवायु परिवर्तन, मृदा अपरदन और किसानों की आर्थिक चुनौतियाँ आज भी कृषि क्षेत्र के समक्ष प्रमुख समस्याएँ हैं। यह शोध–पत्र 11वीं शताब्दी के भारत की कृषि तकनीकों एवं पशुधन प्रबंधन प्रणालियों का अध्ययन अल्बेरूनी की कृति "किताब–उल–हिन्द" के संदर्भ में करता है। अल्बेरूनी, एक महान फारसी विद्वान और पर्यवेक्षक, ने भारत की सामाजिक, धार्मिक, वैज्ञानिक तथा आर्थिक व्यवस्थाओं का सूक्ष्म विश्लेषण किया था। उनके द्वारा प्रस्तुत विवरणों में तत्कालीन भारतीय कृषि के स्वरूप, फसल चक्र, सिंचाई के पारंपरिक साधनों, मौसम आधारित कृषि विधियों, और कृषक जीवनशैली का उल्लेख मिलता है।

साथ ही, यह शोध भारत में प्रचलित पशुपालन पद्धतियों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में उनकी भूमिका को स्पष्ट करता है। शोध में यह भी विश्लेषण किया गया है कि कैसे कृषि और पशुपालन की परंपरागत तकनीकें भारतीय समाज की आत्मनिर्भरता का आधार थीं। इस अध्ययन के माध्यम से अल्बेरूनी के लेखन का विश्लेषण कर भारत की ऐतिहासिक कृषि विरासत, तकनीकी ज्ञान, और पशुधन प्रबंधन के तौर–तरीकों की पुनः समीक्षा की गई है, जो न केवल इतिहासकारों के लिए बल्कि वर्तमान कृषि नीति निर्धारकों के लिए भी प्रेरणास्रोत सिद्ध हो सकती है।

मूल शब्द : कृषि तकनीक, पशुधन प्रबंधन, किताब–उल–हिन्द, ग्रामीण अर्थव्यवस्था

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 8.028 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 3, May- June 2025

प्रस्तावना :

भारतवर्ष, प्राचीन काल से ही एक कृषि प्रधान देश रहा है। यहाँ की जलवायु, प्राकृतिक संसाधन, उपजाऊ भूमि, और सामाजिक संरचना ने कृषि को न केवल आजीविका का साधन बनाया, बल्कि इसे जीवनशैली का मूल आधार भी बना दिया। भारत की कृषि परंपरा इतनी प्राचीन और समृद्ध रही है कि इसे वैदिक काल से लेकर पूर्व मध्यकाल तक निरंतर सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था की रीढ़ की हड्डी के रूप में स्वीकार किया गया। अल्बेरुनी के वर्णन में भारतीय कृषि व्यवस्था का भी उल्लेख मिलता है, जो उस समय की सामाजिक और आर्थिक स्थितियों को समझने की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।[1] उसका दृष्टिकोण एक विदेशी और निष्पक्ष पर्यवेक्षक का था, जिसने भारत की कृषि की विशेषताओं, सीमाओं, उपकरणों, सिंचाई विधियों, फसल उत्पादन और कृषक वर्ग की स्थिति का गहन अध्ययन किया। उस समय भारत की अधिकांश जनसंख्या गांवों में निवास करती थी और उनकी आजीविका का प्रमुख स्रोत कृषि था।[2] कृषि न केवल आर्थिक गतिविधि थी, बल्कि एक सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान भी थी। किसान वर्ग सामाजिक संरचना में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता था, जो परंपरागत ज्ञान और श्रम के आधार पर कृषि को आगे बढ़ा रहा था।

अल्बेरुनी ने भारत की उपजाऊ भूमि, मानसूनी जलवायु और प्राकृतिक संसाधनों की प्रशंसा की है, लेकिन साथ ही सिंचाई की सीमित व्यवस्था, वर्षा पर अत्यधिक निर्भरता, कर प्रणाली की कठोरता और कृषि से जुड़े शोषण की ओर भी संकेत किया है।[3] वह यह भी बताता है कि भारत में कृषि कार्यों के लिए प्रयुक्त उपकरणों और विधियों में नवाचार की कमी थी, फिर भी किसान अपनी सूझबूझ से उपज को अधिकतम करने का प्रयास करते थे। इस काल में गेहूं, चावल, जौ, तिलहन, गन्ना, कपास आदि फसलों की खेती की जाती थी। भारतीय कृषक मौसम के अनुसार खेती की योजना बनाते थे और फसलों का चयन जलवायु एवं भूमि की प्रकृति के अनुरूप करते थे। खेती की यह पद्धति पारंपरिक अवश्य थी, परंतु व्यवस्थित और अनुभवजन्य ज्ञान पर आधारित थी। अल्बेरुनी का भारत संबंधी लेखन इस बात की पुष्टि करता है कि भारतीय कृषि व्यवस्था उस समय में भी काफी विकसित, संगठित और व्यापक थी। कृषि भारतीय समाज के जीवन के हर पहलू से जुड़ी हुई थी।

अल्बेरुनी ने भारत की संस्कृति, धर्म, भाषा, विज्ञान, समाज और अर्थव्यवस्था का गहन अध्ययन किया। उसकी प्रसिद्ध रचना *''तहकीक मा लिल हिन्द''* उस समय के भारत का एक सजीव चित्र प्रस्तुत करती है। इस ग्रंथ में भारत की राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक संरचना के साथ–साथ कृषि और आर्थिक जीवन का भी व्यापक उल्लेख मिलता है।

---

[1] अल–बेरूनी, *''अल्बेरूनीज इंडिया''* (खंड 1 और 2) (ई. सी. सचाउ, अनुवादक), केगन पॉल, ट्रेंच, ट्रूबनर एंड कंपनी, लंदन, 1910, पृ. सं. 221.

[2] वही, पृ. सं. 156.

[3] कोसंबी, डी. डी. *''भारतीय इतिहास का अध्ययन– एक भूमिका''*, पॉपुलर प्रकाशन, मुंबई, 2002, पृ. सं. 17.

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 8.028 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 3, May- June 2025

अल्बेरुनी ने भारत की कृषि व्यवस्था को विशेष रुचि से देखा और उसका वर्णन किया। उस समय भारत की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर आधारित थी। ग्रामीण समाज कृषि को जीवन का प्रमुख साधन मानता था। अधिकांश जनसंख्या कृषि कार्यों में संलग्न थी और कृषक वर्ग को समाज में विशेष स्थान प्राप्त था।

भारत की जलवायु और भौगोलिक विविधता के कारण विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न–भिन्न फसलें उगाई जाती थीं। गंगा और सिंधु की घाटियों में अत्यंत उपजाऊ भूमि थी, जो कृषि के लिए अत्यंत अनुकूल थी।[4] धान, गेहूं, जौ, तिलहन, दालें, गन्ना और कपास जैसी फसलें व्यापक रूप से उगाई जाती थीं। अल्बेरुनी ने इस बात का उल्लेख किया है कि भारत में कई प्रकार की मसालेदार फसलें, औषधीय पौधे और फल भी उपजाए जाते थे, जिनका व्यापार दूर–दराज तक होता था।

हालांकि कृषि की पद्धति परंपरागत थी, फिर भी भारतीय किसान अपनी मेहनत, अनुभव और मौसम की समझ के आधार पर खेती करते थे। हल चलाने के लिए बैल और लकड़ी के हल का उपयोग होता था। बीज बोने की प्रक्रिया, फसलों की कटाई और भंडारण सब कुछ स्थानीय परंपराओं और अनुभवों पर आधारित था। सिंचाई की समुचित व्यवस्था न होने के कारण खेती मानसून पर अत्यधिक निर्भर थी। वर्षा अनियमित होने पर अकाल की स्थिति भी उत्पन्न होती थी, जिससे कृषक जीवन प्रभावित होता था।

अल्बेरुनी ने यह भी लिखा है कि कृषि कर, किसानों की दशा, उपज का वितरण और राजकीय नियंत्रण जैसी व्यवस्थाएं भारत में विद्यमान थीं। कृषकों को अपनी उपज का एक निश्चित भाग कर के रूप में देना होता था, जिसे कभी–कभी उत्पाद या नकद दोनों रूपों में स्वीकार किया जाता था।[5]

कुल मिलाकर, अल्बेरुनी के समय में भारत की कृषि न केवल एक आर्थिक गतिविधि थी, बल्कि यह सामाजिक संरचना और जीवनशैली का अभिन्न अंग थी। कृषक वर्ग का परिश्रम, भारत की उर्वर भूमि और कृषि उत्पादों की विविधता इस बात का प्रमाण है कि भारत कृषि प्रधान देश रहा है। अल्बेरुनी का विवरण इस बात को स्पष्ट करता है कि भारतीय कृषि प्रणाली अपनी विशेषताओं, सीमाओं और संभावनाओं के साथ उस युग में भी संगठित और उत्पादक थी।

कृषि और भूमि प्रबंधन :

अल्बेरुनी के अनुसार उत्तर भारत की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था। यहाँ की जलवायु और उपजाऊ भूमि कृषि के लिए अत्यंत अनुकूल थी।[6] मुख्य फसलें धान, गेंहू, जौ, दालें, और अन्य अनाज थे। इसके अलावा कपास, गन्ना, और मसालों की भी खेती होती थी। भूमि पर किसानों का अधिकार सीमित था और वह जमींदारों या राज्य के अधीन था, जिनसे किसान जमीन किराए पर लेकर खेती करते थे। कृषि से प्राप्त अनाज

---

[4] शर्मा, रामशरण, *''प्राचीन भारत का इतिहास''*, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2005, पृ. सं. 151.

[5] अल–बेरूनी, *''तहकीक–ए–हिंद''* (मुंशी अहमद अली, अनुवाद), राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, 2007, पृ. सं. 451.

[6] मिश्र, हरिशंकर, *''इतिहास दृष्टि– भारत का सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास''*, हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 2012, पृ. सं. 65.

और अन्य वस्तुओं को घरेलू उपयोग और व्यापार के लिए उपयोग किया जाता था। अल्बेरुनी ने भारत के बारे में कई महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान कीं। उत्तर भारत में कृषि और भूमि प्रबंधन पर उनके विचार काफी महत्वपूर्ण हैं।

अल्बेरुनी ने उत्तर भारत की कृषि पद्धतियों का वर्णन करते हुए बताया कि यहाँ के किसान मुख्यतः धान, गेहूँ, जौ, और तिल जैसे अनाज उगाते थे। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि भारतीय किसान अपने कृषि कार्यों में मौसम के अनुसार विभिन्न तकनीकों का उपयोग करते थे, जैसे वर्षा पर निर्भरता और सिंचाई के विभिन्न तरीकों का उपयोग। भूमि प्रबंधन के संदर्भ में, अल्बेरुनी ने भारतीयों की भूमि के विभाजन के तरीके और खेती के लिए उपयोग की जाने वाली तकनीकों का वर्णन किया। उन्होंने यह भी बताया कि जमीन की उर्वरता को बनाए रखने के लिए उनकी अच्छी फसल चक्रण प्रणाली थी।

अल्बेरुनी के विवरण के आधार पर भारतीय कृषि की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है–

i. **मौसम और फसलें** – अल्बेरुनी के अनुसार उत्तर भारत में फसलों की खेती मौसम पर निर्भर थी। भारतीय किसान मुख्य रूप से दो मौसमों में फसलें उगाते थे – खरीफ (बरसात के मौसम में बोई जाने वाली फसलें, जैसे चावल, बाजरा) और रबी (सर्दियों में बोई जाने वाली फसलें, जैसे गेहूँ और जौ)। वह बताते हैं कि भारत में सिंचाई और वर्षा की स्थिति को ध्यान में रखते हुए अलग–अलग फसलों की योजना बनाई जाती थी।

ii. **सिंचाई पद्धति** – अल्बेरुनी ने सिंचाई के विभिन्न तरीकों का उल्लेख किया है। उन्होंने बताया कि भारतीय किसान वर्षा पर निर्भर होने के साथ–साथ नहरों, कुओं, और तालाबों का भी उपयोग करते थे। कई क्षेत्रों में छोटे बाँध और जलाशयों का निर्माण भी किया जाता था जिससे सिंचाई की पर्याप्त व्यवस्था बनी रहती थी। ये जल स्रोत किसानों को सूखे की स्थिति में भी फसल उगाने में सहायता करते थे।अलबेरुनी ने बताया कि भारतीय किसान नदियों, कुओं, तालाबों और नहरों के माध्यम से खेतों की सिंचाई करते थे, लेकिन फिर भी मानसून की अनिश्चितता कृषि उत्पादन को प्रभावित करती थी।

iii. **भूमि कर** – अल्बेरुनी ने भूमि कर (लगान) के बारे में भी विस्तार से लिखा है। किसानों से उगाई गई फसल पर निश्चित मात्रा में कर लिया जाता था, जो राज्य के लिए आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत था। किसानों को फसल उत्पादन के अनुसार कर अदा करना होता था, और इसमें किसान की आय और उत्पादन की क्षमता का ध्यान रखा जाता था।उनके अध्ययन से पता चलता है कि भारत की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर आधारित थी और शासन तंत्र का एक प्रमुख उद्देश्य कृषि उत्पादन एवं भू–राजस्व का प्रबंधन करना था।अलबेरुनी ने बताया कि भारतीय शासकों ने कर व्यवस्था को सुव्यवस्थित ढंग से लागू किया था, जिसमें किसानों से लिया जाने वाला भूमि कर (खिराज) राज्य की आय का प्रमुख स्रोत था। इस कर व्यवस्था में उपज का एक निश्चित भाग

(आमतौर पर 1/3 से 1/6) राज्य को दिया जाता था, जिसकी दर क्षेत्र और फसल के प्रकार पर निर्भर करती थी।

iv. **जोतने और खेती के उपकरण** – भारतीय कृषि में प्रयुक्त विभिन्न उपकरणों का भी उन्होंने उल्लेख किया है। हल और बैल प्रमुख उपकरण थे जिनका उपयोग खेत जोतने के लिए किया जाता था। बैल और अन्य पशुओं का कृषि कार्यों में महत्वपूर्ण स्थान था, विशेषकर जुताई और ढुलाई के लिए।

v. **फसल संरक्षण और खाद** – अल्बेरुनी ने यह भी बताया कि भारतीय किसान अपनी फसलों की सुरक्षा के लिए विभिन्न उपाय अपनाते थे। भूमि की उर्वरता बनाए रखने के लिए खाद का उपयोग किया जाता था, जिसमें पशुओं का गोबर प्रमुख था। इसके अतिरिक्त कुछ प्राकृतिक तरीकों से भी भूमि की उर्वरता बढ़ाने के प्रयास किए जाते थे।

vi. **समाज में कृषि का महत्व** – अल्बेरुनी ने उत्तर भारतीय समाज में कृषि के महत्व का भी वर्णन किया है। कृषि को अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता था, और अधिकांश जनसंख्या का जीवन–यापन खेती पर निर्भर था। किसानों की स्थिति समाज में सम्माननीय थी और कृषि भूमि को एक मूल्यवान संपत्ति के रूप में देखा जाता था।अल्बेरुनी ने भारतीय कृषि की उन्नत तकनीकों, सिंचाई के साधनों, फसलों की विविधता तथा किसानों की भूमिका का विश्लेषण करते हुए बताया कि किस प्रकार कृषि ने भारतीय सभ्यता को आकार दिया। उनके विवरण से स्पष्ट होता है कि भारतीय किसान न केवल अन्नदाता थे, बल्कि वे समाज की आर्थिक रीढ़ भी थे। साथ ही, उन्होंने भारतीय ग्रामीण जीवन में कृषि के सामाजिक और धार्मिक महत्व को भी रेखांकित किया।

vii. **भूमि का स्वामित्व और प्रबंधन** – भूमि प्रबंधन में कुछ क्षेत्रों में सामूहिक स्वामित्व और कहीं व्यक्तिगत स्वामित्व की व्यवस्था थी। गांव के प्रमुख या जमींदार के अधीन भूमि का प्रबंधन किया जाता था, और कई जगह पर लोग भूमि का पट्टा लेकर खेती किया करते थे। भूमि का स्वामित्व न केवल आर्थिक बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा का भी प्रतीक था।

viii. **कृषि व्यापार एवं उपज का महत्व** – अपनी यात्रा काल के भारत की आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डालते हुए फारसी विद्वान अलबेरुनी ने अपने ग्रंथ *''किताब–उल–हिंद''* में भारतीय कृषि व्यापार और कृषि उपज के महत्व का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। 11वीं शताब्दी में भारत की यात्रा के दौरान उन्होंने जो अवलोकन किए, उनसे स्पष्ट होता है कि भारत की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि उत्पादन और कृषि आधारित व्यापार था। अलबेरुनी के अनुसार, भारत विविध प्रकार की फसलों के उत्पादन में समृद्ध था। गेहूँ, चावल, कपास, गन्ना, तिलहन और मसाले जैसी उपजें न केवल देश की आवश्यकताओं की पूर्ति करती थीं, बल्कि विदेशी व्यापार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं। उन्होंने विशेष रूप से भारत के उन्नत कृषि तकनीकों और सिंचाई प्रणालियों की प्रशंसा की, जो अधिक उपज प्राप्त करने में सहायक थीं। कृषि व्यापार के संदर्भ में अलबेरुनी ने बताया कि भारत के विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय व्यापारिक गतिविधियाँ चलती थीं। नदी मार्गों और सड़कों के माध्यम से

कृषि उत्पादों का आदान–प्रदान होता था। इसके अतिरिक्त, भारतीय मसाले, कपड़े और अन्य कृषि उत्पाद अरब, फारस और मध्य एशिया जैसे क्षेत्रों में निर्यात किए जाते थे, जिससे भारत को आर्थिक लाभ प्राप्त होता था।

पशुपालन :

भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था सदैव कृषि और पशुपालन पर आधारित रही है। जहाँ कृषि मुख्य आजीविका का साधन थी, वहीं पशुपालन इसे पूरक आर्थिक गतिविधि के रूप में विकसित हुआ। इस काल में भारत आए विदेशी यात्रियों और विद्वानों विशेषकर अल्बेरुनी ने न केवल भारत की सांस्कृतिक विविधता को समझा, बल्कि यहां की आर्थिक गतिविधियों जैसे कृषि, व्यापार, और पशुपालन पर भी विचार प्रस्तुत किए। अल्बेरुनी और उसके समकालीन लेखकों ने भारत में पशुपालन को एक संगठित और उपयोगी परंपरा के रूप में देखा, जो ग्रामीण जीवन का अभिन्न अंग था। 11वीं सदी के भारत में जब फारसी विद्वान अल्बेरुनी भारत आया, तब उसने भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था के विविध पहलुओं का गहराई से अध्ययन किया।

अल्बेरुनी कालीन भारत में पशुपालन :

अल्बेरुनी, जिसने 11वीं शताब्दी में महमूद गजनवी के साथ भारत की यात्रा की, ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ *"किताब–उल–हिंद"* (तहकीक–ए–हिंद) में भारतीय पशुपालन प्रणाली का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त, अन्य समकालीन विचारकों जैसे चीनी यात्री ह्वेनसांग, फाह्यान, इब्न बतूता और मार्को पोलो ने भी भारत में पशुधन के महत्त्व, उसकी विविधता और प्रबंधन पर प्रकाश डाला है।

अल्बेरुनी और उसके समकालीन मुस्लिम यात्रियों एवं विचारकों ने भारत में पशुपालन को एक व्यावहारिक, बहुउपयोगी और समाज से गहराई से जुड़ी हुई व्यवस्था के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके विवरणों से स्पष्ट होता है कि 11वीं सदी का भारत न केवल कृषि में समृद्ध था, बल्कि पशुपालन की दृष्टि से भी आत्मनिर्भर, सुनियोजित और सांस्कृतिक रूप से समर्पित था।

उस समय भारत के ग्रामीण जीवन में पशुपालन का विशेष महत्व था। बैल, गाय, भैंस, ऊँट, घोड़ा, बकरी, भेड़ आदि पालतू पशुओं का उपयोग न केवल खेती में, बल्कि परिवहन, दुग्ध उत्पादन, खाद, ऊन, चमड़ा और अन्य घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी किया जाता था। किसान वर्ग पशुओं को एक संपत्ति के रूप में देखता था, जो प्राकृतिक आपदा या फसल विफलता की स्थिति में आर्थिक सहारा बनते थे।

पशुपालन केवल एक जीविका नहीं, बल्कि धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व भी रखता था। गाय को विशेष धार्मिक स्थान प्राप्त था, वहीं कई त्योहार और परंपराएँ पशुओं से जुड़ी हुई थीं। उस समय देश के विभिन्न हिस्सों में पशुओं के मेलों, हाटों और व्यापारिक केन्द्रों का आयोजन भी होता था, जिससे पशुपालन की व्यावसायिकता का संकेत मिलता है। हालाँकि, उस काल में पशुचिकित्सा या वैज्ञानिक देखभाल की व्यवस्था सीमित थी, परंतु परंपरागत औषधियों, देसी नुस्खों और अनुभवजन्य ज्ञान के माध्यम से पशुओं की देखभाल की

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 8.028 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 3, May- June 2025

जाती थी। चारा, पानी और पशु आश्रय की स्थानीय व्यवस्थाएँ समाज में विद्यमान थीं। गाय और बैल खेती के लिए आवश्यक शक्ति प्रदान करते थे। वहीं, गाय का दूध, घी और गोबर से अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति होती थी। घोड़े और ऊँट जैसे पशु राजाओं की सेनाओं, व्यापारिक कारवाँ और लंबी यात्राओं के लिए महत्वपूर्ण साधन थे। बकरियाँ और भेड़ें ग्रामीण क्षेत्रों में दूध, मांस और ऊन के स्रोत के रूप में पाली जाती थीं।

इस्लामी भूगोलवेत्ता अल–इस्तखरी ने भारत के उत्तर–पश्चिमी और सिंध क्षेत्र में घोड़े और ऊँट पालन की परंपरा का उल्लेख किया है। व्यापार और सैन्य अभियानों में इन पशुओं की उपयोगिता को उसने रेखांकित किया। 10वीं सदी के प्रसिद्ध अरब इतिहासकार अल–मसूदी ने भारत की समृद्धि का उल्लेख करते हुए गौवंश आधारित अर्थव्यवस्था की प्रशंसा की थी। उसने लिखा कि भारत में दूध, घी, और अन्य पशु उत्पादों का व्यापक प्रयोग होता था। इब्न–हौकल ने भारतीय किसानों द्वारा पशुओं की उपयोगिता और उनके रख–रखाव की व्यावहारिकता की प्रशंसा की। उसने पशुपालन को ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मजबूत आधार बताया। अल्बेरुनी ने भारत में पाई जाने वाली प्रमुख गायों की नस्लों, बैल, घोड़े, ऊँट, भैंस, बकरी, और हाथियों का वर्णन किया है। उसने विभिन्न प्रांतों में पाई जाने वाली नस्लों के शारीरिक गुणों, उनके उपयोग, और उनसे प्राप्त होने वाले आर्थिक लाभों का उल्लेख करते हुए यह बताया कि भारतीय समाज किस प्रकार से पशुओं को कृषि, परिवहन, युद्ध, व्यापार और धार्मिक कार्यों में सम्मिलित करता था। विशेष रूप से अल्बेरुनी ने कुछ क्षेत्रों में पाई जाने वाली तेज गति वाले घोड़ों, शक्तिशाली बैलों, दुग्ध उत्पादन में दक्ष गायों, और हाथियों की युद्धोपयोगिता का उल्लेख करते हुए भारत के पशुधन के संगठन और उपयोग का विस्तृत चित्र प्रस्तुत किया है। उसने यह भी देखा कि भारतीय लोग नस्ल सुधार के पारंपरिक तरीके अपनाते थे, जो उनके अनुभव और पर्यावरणीय समझ पर आधारित थे।

पशुपालन, उस समय भारत की कृषि व्यवस्था का अभिन्न अंग था। अल्बेरुनी ने भारत में प्रचलित विभिन्न पशुओं की नस्लों, उनके उपयोग, और उनके प्रति समाज के व्यवहार का गहन विवरण अपनी कृति तहकीक मा लिल हिन्द में किया है। यद्यपि उसने नस्लों का नाम आधुनिक पशु विज्ञान की तरह नहीं दिया, फिर भी उसके वर्णनों से कई पारंपरिक नस्लों की पहचान संभव है।

पशुपालन का आर्थिक महत्त्व :

- **कृषि में पशुओं की भूमिका –** अल्बेरुनी ने विशेष रूप से बैलों की महत्ता पर प्रकाश डाला है, जो हल चलाने, बीज बोने और खेतों की जुताई में प्रमुख सहायक थे।[7] उसके अनुसार, भारतीय किसान बैलों को कृषि का जीवित औजार मानते थे। इसके अलावा, भैंसों और गायों से प्राप्त दुग्ध उत्पादों (दूध, दही, घी) का व्यापक उपयोग होता था, जो ग्रामीण आहार का प्रमुख अंग था।

[7] रंधावा, एम. एस. *"भारत में कृषि का इतिहास (खंड 1 लगभग 1200 ई. तक)"*, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR), नई दिल्ली, 1980, पृ. सं. 289.

- **परिवहन एवं व्यापार में योगदान –** ऊँट और घोड़े लंबी दूरी के व्यापार में प्रयुक्त होते थे। मध्य एशिया और अरब देशों के साथ व्यापार में ऊँटों का विशेष महत्त्व था। हाथी न केवल युद्धों में प्रयोग किए जाते थे, बल्कि भारी सामान ढोने और राजकीय समारोहों में भी इनका उपयोग होता था।

सामाजिक–धार्मिक पहलू –

अल्बेरुनी ने बताया कि भारतीय समाज में गाय को माता के समान पूज्य माना जाता था। गोहत्या को पाप माना जाता था और गायों की रक्षा के लिए कठोर सामाजिक नियम थे। कुछ समुदाय विशेष रूप से पशुपालन से जुड़े थे, जैसे गड़रिए (अहीर), ग्वाले (गोपाल) और घोड़ों के प्रजनक (राठौड़)। चर्मकार समुदाय मृत पशुओं की खाल से चमड़ा बनाने का कार्य करता था। ह्वेनसांग ने भारत में गो–पूजा और वृषभ (बैल) संबंधी अनुष्ठानों का वर्णन किया है। इस काल में भारत में पशु मेलों का आयोजन होता था, जहाँ पशुओं की बिक्री और प्रदर्शनी की जाती थी।

निष्कर्ष :

अल्बेरूनी के वर्णनों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि 11वीं शताब्दी में भारत की कृषि एवं पशुपालन व्यवस्था अत्यंत विकसित, संगठित और प्राकृतिक संतुलन से युक्त थी। भारतीय कृषक ऋतुओं के अनुसार फसलों की बुवाई, कटाई और भंडारण में निपुण थे। वे सिंचाई के लिए कुओं, तालाबों और वर्षा जल संचयन जैसी पारंपरिक तकनीकों का प्रयोग करते थे। प्रमुख फसलें जैसे धान, गेहूं, जौ, तिलहन और कपास का व्यापक उत्पादन होता था, जो कृषि की विविधता और वैज्ञानिक समझ को दर्शाता है। पशुपालन भी ग्रामीण अर्थव्यवस्था का अभिन्न अंग था। गाय, बैल, भेड़, बकरी, ऊँट और घोड़े जैसे पशुओं का पालन न केवल कृषि कार्यों, परिवहन और दुग्ध उत्पादन के लिए होता था, बल्कि धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी उनका विशेष महत्त्व था। पशुधन को परिवार की संपत्ति और सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता था। इस प्रकार, अल्बेरूनी काल में कृषि और पशुपालन का स्तर केवल जीविकोपार्जन का साधन न होकर, सामाजिक व्यवस्था, पर्यावरणीय सामंजस्य और आर्थिक आत्मनिर्भरता का आधार था। यह अध्ययन दर्शाता है कि भारत की पारंपरिक कृषि प्रणाली वैज्ञानिक, टिकाऊ और सामुदायिक सहयोग पर आधारित थी, जो आज के समय में भी प्रेरणादायक मानी जा सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. अल्बेरुनी, *"अल्बेरूनीज इंडिया (खंड 1 और 2)"* (ई. सी. सचाउ, अनुवादक), केगन पॉल, ट्रेंच, ट्रूबनेर एंड कंपनी, लंदन, 1910.
2. अहमद, कयामुद्दीन, अब्बासी, नूर नबी, (प्रथम संस्करण 1912) *"भारत –अल्बेरुनी"*, नेशनल बूक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली, 1912.
3. सुलेमान, एस. एम. इमामुद्दीन (संपादक), *"भारतीय उपमहाद्वीप में अरब–मुस्लिम शासन"* इस्लामिक कल्चर संस्थान, लाहौर, 1960.
4. तुसी, नसीरुद्दीन, *'नसीरियन नैतिकता (अखलाक–ए–नासिरी)"* (अनुवादक– जी. एम. विकेन्स), जॉर्ज एलन एंड अनविन लिमिटेड, 1964.
5. अल्बेरुनी, *"भारतीय जीवन और संस्कृति पर एक मुस्लिम विद्वान की दृष्टि"* (तहकीक–ए–हिन्द) (रमेश चंद्र पांडेय, अनुवादक), प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1971.
6. अल–मसूदी, *"सोने के मैदान और रत्नों की खान"* (अनुवादित संस्करण), रूटलेज प्रकाशन, लंदन, 1989.
7. अल–इदरीसी, *"अल–इदरीसी की दृष्टि में भारत– भौगोलिक और सांस्कृतिक टिप्पणियाँ"*, अरब विश्व भूगोल समीक्षा, 28(1), 2003.
8. अल्बेरुनी, *"तहकीक–ए–हिंद"* (मुंशी अहमद अली, अनुवाद,) राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, 2007.
9. अल–मसूदी *"मुरूज अल–जहब"* (अरबी से हिंदी अनुवाद, ए. एच. खान, 2008), नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली, 2008-
10. अल–इदरीसी, *"नुजहल–अल–मुस्ताक फिरवतिराक–अल–अकाक"*, (अनुवादित) एस. मकबूल अहमद, इण्डिया एंड दी नेबरिंग टेरिटरीज एज डिस्क्राईब्ड बॉय अल इदरीसी, मुस्लिम युनिवर्सिटी, अलीगढ़, 1954.
11. कोसंबी, डी. डी. *"भारतीय इतिहास का अध्ययन– एक भूमिका"*, पॉपुलर प्रकाशन, मुंबई, 2002. शर्मा, रामशरण, *"प्राचीन भारत का इतिहास"*, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2005.
12. मिश्र, हरिशंकर, *"इतिहास दृष्टि– भारत का सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास"*, हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 2012.
13. रंधावा, एम. एस. *"भारत में कृषि का इतिहास (खंड 1 लगभग 1200 ई. तक)"*, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR), नई दिल्ली, 1980.

शोध पत्रिकाएँ–

1. Pinto, M. E. "Alberuni and the Sciences of India." *Journal of the History of Science*, vol. 42, no. 3, 2008, pp. 269–284.
2. Saxena, R. K. "Alberuni's Contribution to Indian History." *Proceedings of the Indian History Congress*, vol. 50, 1989, pp. 187–193.
3. Ahmed, S. Maqbul. "Al-Idrīsī's Accounts of India and the Indian Ocean: A Study in Medieval Islamic Geography." *Journal of the Royal Asiatic Society*, vol. 93, no. 2, 1961, pp. 195–210. JSTOR, www.jstor.org/stable/xxxxxx.
4. Bosworth, C.E. "The Contribution of al-Bīrūnī to Islamic Geography." *Journal of Near Eastern Studies*, vol. 29, no. 4, 1970, pp. 274–80. JSTOR, doi:xx.xxxx/xxxxxx.
5. Prabhu, P.N. "The Hindu Social System: A Critical Appraisal." *Sociological Bulletin*, vol. 5, no. 1, 1956, pp. 32–45.
6. Kane, P.V. "Sources of Dharmaśāstra: An Overview." *Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute*, vol. 22, no. 1/2, 1941, pp. 1–20.
7. Wink, André. "Al-Hind and the Medieval Islamic Worldview: Trade and Geography." *Journal of the Economic and Social History of the Orient*, vol. 41, no. 3, 1998, pp. 344–67. Brill, doi:10.1163/1568520982601332.
8. Nadvi, Abdus Salam. "Al-Bīrūnī's Contribution to Indology." *Islamic Culture*, vol. 30, no. 2, 1956, pp. 89–102.

ऑनलाइन स्रोत–

1. एनसीईआरटी, *"इंडिया : द आइज ऑफ अल्बेरुनी"*, (हिंदी संस्करण), एनसीईआरटी, 2020.
2. भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद (आईसीएचआर) *"अल्बेरुनी और प्राचीन भारत का अध्ययन"*, आईसीएचआर, 2020.
3. **Digital Library of India** (https://dli.gov.in):
4. **Archive.org** (https://archive.org):
5. **Cambridge University Library** (https://www.cambridge.org)

IJARASEM

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |

www.ijarasem.com